आचार्य काणभिक्षु

जीवन-परिचय : आचार्य जिनसेन ने काणभिक्षु को कथाग्रन्थ के रचयिता के रूप में उल्लेख किया है—इससे ज्ञात होता है कि उनका कोई प्रथमानुयोग सम्बन्धी ग्रन्थ रहा है।

उन्होंने लिखा है कि वे काणभिक्षु जयवन्त हों जिन्होंने श्रेष्ठ कथाग्रन्थ लिखा है। इससे स्पष्ट जाना जा सकता है कि काणभिक्षु ने किसी कथाग्रन्थ अथवा पुराण की रचना की थी। खेद है कि यह अपूर्व ग्रन्थ इस समय अनुपलब्ध है।

इनकी गुरु-परम्परा भी अज्ञात है, किन्तु यह तो निश्चित ही है कि इनका समय जिनसेनाचार्य से पूर्ववर्ती है। इनका समय विक्रम की 8वीं शताब्दी माना जाता है।

रचना-परिचय : काणभिक्षु की एकमात्र रचना कथा-ग्रन्थ है, जो अभी उपलब्ध नहीं है, अत: उसका परिचय प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है।